

# 白话聊斋

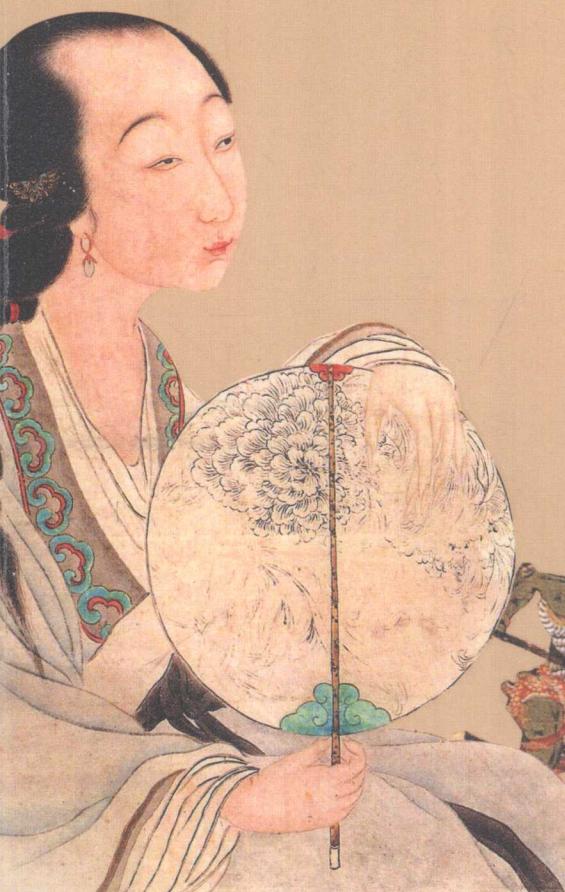
倩女销魂弄风姿，万般柔情献书生；

鬼界人生难分辨，朦胧缥缈一线牵。

马文作

编译

蒲松龄著



内蒙古人民出版社

# 白话聊斋

倩女销魂弄风姿，万般柔情献书生，  
鬼界人生难分辨，朦胧缥缈一线牵

马文作

蒲松龄著

编译

内蒙古人民出版社

中华传统文化精品文库



**图书在版编目(CIP)数据**

白话聊斋/(清)蒲松龄著;马文作编译.—呼和浩特:  
内蒙古人民出版社,2008.9  
(中华传统文化精品文库)  
ISBN 978 - 7 - 204 - 09608 - 4

I . 白… II . ①蒲…②马… III . 笔记小说—中国—清代  
IV . I242.1

中国版本图书馆 CIP 数据核字(2008)第 085609 号

**中华传统文化精品文库**

---

主 编 马文作  
责任编辑 张 钧  
出版发行 内蒙古人民出版社  
地 址 呼和浩特市新城区新华大街祥泰大厦  
印 刷 北京市业和印务有限公司  
开 本 700 × 1000 1/16  
印 张 460  
字 数 4500 千  
版 次 2008 年 9 月第 1 版  
印 次 2008 年 9 月第 1 次印刷  
印 数 1—10000 册  
书 号 ISBN 978 - 7 - 204 - 09608 - 4/G · 2762  
全套定价 660.00(共 20 册)

---

如出现印装质量问题,请与我社联系。联系电话:(0471)4971562 4971659

# 前　　言

中华民族有着悠久的历史和灿烂的文化，古典文化名著是灿烂文化的重要组成部分，凝聚了中国文化的精华，代表了中国古代各个方面的最高成就，文学的发展源远流长，推动了中国几千年的历史进程，影响着人们生活的方方面面。

中国历史上许多的英才俊杰，都与古典名著有着不解之缘。他们大都是从前人的著作获得启迪，又给后人留下了丰厚的财富。许多古今伟人就是在古典名著的熏陶下走向成功的。中国古典文学是中华传统文化的辉煌呈现，它源远流长，涵蕴丰富，充满着浓烈的民族美学气息，散发着永久的艺术魅力。鉴于此，我们编著了《中华传统文化精品文库》系列丛书呈献给大家。

本套丛书包括《史记》、《四书五经》、《孙子兵法与三十六计》、《资治通鉴》、《四库全书》、《中华上下五千年》、《中国通史》、《中国全史》、《二十四史》、《白话聊斋》、《唐诗、宋词、元曲三百首》、《古文观止》、《清朝全史》、《二十五史》、《唐诗、宋词、元曲鉴赏》、《冰鉴》、《菜根谭》、《三言二拍》、《道德经》、《老子·论语·孟子》共二十部精华之作。

《中华传统文化精品文库》内容丰富，含盖面广，是一份不可多得的文化精品，无论是家庭收藏，还是馈赠亲友，都是难得的上好选择。

让我们有机会——

与古人对话，  
与文化同行

## 目 录

## 第一卷

|     |    |
|-----|----|
| 考城隍 | 1  |
| 耳中人 | 2  |
| 尸 变 | 2  |
| 喷 水 | 4  |
| 画 壁 | 5  |
| 山 魑 | 7  |
| 咬 鬼 | 8  |
| 捉 狐 | 8  |
| 莽中怪 | 9  |
| 宅 妖 | 10 |
| 研 蟒 | 10 |
| 犬 奸 | 11 |
| 雹 神 | 12 |
| 僧 莪 | 13 |
| 野 狗 | 13 |
| 三 生 | 14 |
| 狐入瓶 | 15 |
| 鬼 哭 | 16 |
| 真定女 | 16 |
| 焦 蝇 | 17 |
| 四十千 | 17 |
| 新 郎 | 18 |
| 灵 官 | 19 |

文言注



|     |    |
|-----|----|
| 鹰虎神 | 19 |
| 叶 生 | 20 |
| 妖 术 | 22 |
| 蛇 人 | 23 |
| 偷 桃 | 25 |
| 种 梨 | 27 |
| 瞳人语 | 28 |
| 王 成 | 31 |
| 青 凤 | 34 |
| 画 皮 | 37 |
| 贾 儿 | 40 |

## 第二卷

|      |    |
|------|----|
| 金世成  | 44 |
| 鲍 石  | 44 |
| 庙 鬼  | 45 |
| 义 鼠  | 45 |
| 地 震  | 45 |
| 海公子  | 46 |
| 海大鱼  | 47 |
| 张老相公 | 47 |
| 造 畜  | 48 |
| 凤阳士人 | 48 |
| 耿十八  | 50 |
| 小官人  | 52 |
| 祝 翁  | 52 |
| 猪婆龙  | 53 |
| 某 公  | 53 |
| 快 刀  | 53 |
| 酒 友  | 54 |
| 口 技  | 55 |

|     |    |
|-----|----|
| 狐 联 | 56 |
| 龙   | 56 |
| 林四娘 | 57 |
| 董 生 | 59 |
| 婴 宁 | 61 |
| 聂小倩 | 67 |
| 丁前溪 | 71 |
| 水莽草 | 72 |
| 珠 儿 | 75 |
| 小官人 | 78 |
| 胡四姐 | 78 |
| 莲 香 | 80 |
| 阿 宝 | 86 |
| 九山王 | 90 |
| 张 诚 | 91 |

### 第三卷

|     |     |
|-----|-----|
| 江 中 | 96  |
| 道 士 | 96  |
| 戏 术 | 98  |
| 丐 僧 | 98  |
| 伏 狐 | 99  |
| 蛰 龙 | 99  |
| 苏 仙 | 100 |
| 汤 公 | 101 |
| 阎 罗 | 102 |
| 单道士 | 102 |
| 小 鬼 | 103 |
| 西 僧 | 104 |
| 汪士秀 | 104 |
| 商三官 | 105 |

文海金石



|     |     |
|-----|-----|
| 于 江 | 107 |
| 谕 鬼 | 108 |
| 泥 鬼 | 108 |
| 梦 别 | 109 |
| 犬 灯 | 109 |
| 番 僧 | 110 |
| 李司鉴 | 110 |
| 翩 翩 | 111 |

第四卷

|      |     |
|------|-----|
| 余德   | 114 |
| 杨千总  | 115 |
| 瓜异   | 116 |
| 产龙   | 116 |
| 保住   | 116 |
| 水灾   | 117 |
| 诸城某甲 | 117 |
| 库官   | 118 |
| 酆都御史 | 118 |
| 龙无目  | 119 |
| 雨钱   | 119 |
| 妾击贼  | 120 |
| 龙取水  | 121 |
| 小猎犬  | 121 |
| 棋鬼   | 122 |
| 捉鬼射狐 | 123 |
| 蹇偿债  | 124 |
| 头滚   | 125 |
| 鬼作筵  | 126 |
| 蛙曲   | 127 |
| 鼠戏   | 127 |

|      |     |
|------|-----|
| 泥书生  | 127 |
| 土地夫人 | 128 |
| 寒月芙蕖 | 128 |
| 酒 狂  | 130 |

## 第五卷

|      |     |
|------|-----|
| 阳武侯  | 134 |
| 赵城虎  | 135 |
| 螳螂捕蛇 | 136 |
| 武 技  | 136 |
| 小 人  | 137 |
| 秦 生  | 138 |
| 酒 虫  | 139 |
| 木雕美人 | 139 |
| 布 客  | 140 |
| 农 人  | 141 |
| 傅飮媼  | 142 |
| 金永年  | 142 |
| 孝 子  | 142 |
| 狮 子  | 143 |
| 阎 王  | 143 |
| 土 偶  | 145 |
| 长治女子 | 146 |
| 义 犬  | 147 |
| 鄱阳神  | 148 |
| 绿衣女  | 148 |
| 黎 氏  | 149 |
| 骂 鸭  | 151 |
| 柳氏子  | 151 |
| 上 仙  | 152 |
| 侯静山  | 153 |

文前注

|           |     |
|-----------|-----|
| 钱 流 ..... | 154 |
| 郭 生 ..... | 154 |
| 龙 肉 ..... | 156 |

## 第六卷

|               |     |
|---------------|-----|
| 潞 令 .....     | 157 |
| 魁 星 .....     | 157 |
| 库 将 军 .....   | 158 |
| 绛 妃 .....     | 158 |
| 河 间 生 .....   | 161 |
| 铁 布 衫 法 ..... | 161 |
| 大 力 将 军 ..... | 162 |
| 白 莲 教 .....   | 163 |
| 杜 翁 .....     | 164 |
| 菱 角 .....     | 165 |
| 考 弊 司 .....   | 167 |
| 阎 罗 .....     | 169 |
| 大 人 .....     | 169 |
| 向 果 .....     | 171 |
| 董 公 子 .....   | 172 |
| 周 三 .....     | 173 |
| 聂 政 .....     | 174 |
| 冷 生 .....     | 175 |
| 狐 惩 淫 .....   | 176 |
| 山 市 .....     | 177 |
| 孙 生 .....     | 178 |
| 八 大 王 .....   | 180 |

## 第七卷

|           |     |
|-----------|-----|
| 罗 祖 ..... | 184 |
|-----------|-----|

|      |     |
|------|-----|
| 刘 姓  | 185 |
| 巩 仙  | 187 |
| 沂水秀才 | 190 |
| 梅 女  | 191 |
| 郭秀才  | 195 |
| 冤 狱  | 196 |
| 鬼 令  | 198 |
| 宦 娘  | 199 |
| 杨疤眼  | 201 |
| 小 翠  | 202 |
| 金和尚  | 206 |
| 龙戏蛛  | 209 |
| 商 妇  | 209 |
| 阎罗宴  | 210 |
| 役 鬼  | 210 |

## 第八卷

|      |     |
|------|-----|
| 画 马  | 211 |
| 放 蝶  | 211 |
| 男生子  | 212 |
| 钟 生  | 213 |
| 鬼 妻  | 215 |
| 黄将军  | 216 |
| 三朝元老 | 216 |
| 医 术  | 217 |
| 藏 虱  | 218 |
| 梦 狼  | 218 |
| 夜 明  | 221 |
| 夏 雪  | 221 |
| 化 男  | 222 |
| 禽 侠  | 222 |

|      |     |
|------|-----|
| 鸿    | 223 |
| 象    | 223 |
| 负 尸  | 224 |
| 紫花和尚 | 224 |
| 周克昌  | 224 |
| 鞠药如  | 225 |
| 蒋太史  | 226 |
| 邵士梅  | 226 |
| 顾生   | 227 |
| 陈锡九  | 228 |

## 第九卷

|     |     |
|-----|-----|
| 邵临淄 | 233 |
| 狂 生 | 233 |
| 澄 俗 | 234 |
| 佟 客 | 234 |
| 辽阳军 | 236 |
| 张贡生 | 236 |
| 单父宰 | 237 |
| 孙必振 | 237 |
| 邑 人 | 237 |
| 元 宝 | 238 |
| 研 石 | 238 |
| 武 夷 | 238 |
| 大 鼠 | 239 |
| 张不量 | 239 |
| 牧 竖 | 239 |
| 富 翁 | 240 |
| 王司马 | 240 |
| 岳 神 | 241 |
| 药 僧 | 241 |

白话聊斋

八〇〇八

|     |     |
|-----|-----|
| 沅俗  | 242 |
| 蛤   | 242 |
| 刘夫人 | 242 |

## 第十卷

|      |     |
|------|-----|
| 王货郎  | 247 |
| 疲龙   | 247 |
| 布商   | 248 |
| 彭二挣  | 249 |
| 何仙   | 249 |
| 牛同人  | 250 |
| 神女   | 251 |
| 三生   | 255 |
| 阿纤   | 256 |
| 仇大娘  | 260 |
| 曹操冢  | 266 |
| 龙飞相公 | 266 |
| 珊瑚   | 269 |
| 金生   | 274 |
| 申氏   | 276 |
| 恒娘   | 279 |
| 葛巾   | 282 |

## 第十一卷

|     |     |
|-----|-----|
| 冯木匠 | 287 |
| 大蝎  | 287 |
| 陈云栖 | 288 |
| 司札吏 | 292 |
| 蚰蜒  | 293 |
| 司训  | 293 |

|         |     |
|---------|-----|
| 黑 鬼     | 294 |
| 织 成     | 294 |
| 竹 青     | 297 |
| 狐 女     | 299 |
| 张氏妇     | 300 |
| 于子游     | 301 |
| 男 妾     | 302 |
| 汪可爱     | 302 |
| 牛 牒     | 303 |
| 王 大     | 303 |
| 香 玉     | 306 |
| 三 仙     | 309 |
| 鬼 隶     | 310 |
| 王 十     | 310 |
| 外 国 人   | 312 |
| 韦 公 子   | 312 |
| 石 清 虚   | 314 |
| 曾 友 于   | 316 |
| 嘉 平 公 子 | 319 |

## 第十二卷

|         |     |
|---------|-----|
| 二 班     | 322 |
| 车 夫     | 323 |
| 乩 仙     | 323 |
| 苗 生     | 324 |
| 蝎 客     | 325 |
| 杜 小 雷   | 326 |
| 雹 神     | 326 |
| 李 八 缸   | 327 |
| 老 龙 舂 户 | 328 |
| 青 城 妇   | 329 |

|      |     |
|------|-----|
| 鹗 鸟  | 329 |
| 古 瓶  | 330 |
| 元少先生 | 331 |
| 薛慰娘  | 332 |
| 桓 侯  | 335 |
| 粉 蝶  | 337 |
| 李檀斯  | 340 |
| 太原狱  | 340 |
| 新郑讼  | 341 |
| 李象先  | 342 |
| 房文淑  | 342 |
| 秦 桤  | 345 |
| 渐东生  | 345 |
| 博兴女  | 346 |
| 一员官  | 346 |
| 丐 仙  | 347 |
| 人 妖  | 350 |

文前言



# 第一卷

## 考城隍

我姐夫的祖父宋老先生，名焘，是本县秀才。有一天，他因病躺在床上，恍惚中看见有个官吏牵着一匹前额长白毛的马，手里拿着官府的文告过来对他说：“请你前去参加考试。”宋老先生说：“主考官还未光临，为何突然提及考试的事？”那官吏并不言语，只是催促他快快动身。宋老先生只好勉强拖着病体乘马随那官吏而去。

他感到脚下的道路非常生疏。转眼间就到了一座城堡前，看上去好像是帝王的都城。一会儿功夫他们便进入官府，只见房舍十分壮丽豪华，上面坐着十多个官员，却不知是什么身份的人，其中只有关帝爷还认识。屋檐下摆着小桌和墩子各两个。在他之前，有一个秀才已坐在一端，宋老先生便挨着他坐在旁边。小桌上放着笔和纸，很快试题纸传下来，展开一看，见上面写着八个字：“一人二人，有心无心。”两人很快把文章写成，呈到殿上。宋老先生文中有这样两句：“有心为善，虽善不赏；无心为恶，虽恶不罚。”殿上众神传阅之后，称赞不已。众神召宋老先生上殿说：“河南缺一个城隍神，你可去任此职。”宋老先生这才醒悟过来，感激涕零地叩头相谢道：“承蒙受到恩赐的任命，怎敢推辞。只是家里有七十二岁老母，无人奉养。我请求侍奉老母送终后，再听从任命。”上面有位像帝王模样的人立即令人查看他母亲的寿数，一位留着长胡须的官吏翻开表册查阅一遍说：“还有九年阳寿。”正当大家踌躇问，关帝说：“不妨让张先生姑且代职九年，到时让他接任。”然后又对宋老先生说：“本应立即赴任，今念及你的一片仁义孝敬之心，可批准九年假期，到时候再召你赴任此职。”随即又勉励了那位秀才几句，二人垂首叩拜一齐退下。

那位秀才握着宋老先生的手，一直送到郊外。他自我介绍说长山县张某。临别时又作诗相赠，具体内容全忘了，其中仅“有花有酒春常在，无烛无灯夜自明”两句记下了。宋老先生骑上马告别张某而去。

等回到家里时，豁然如梦初醒。这时，他已死去三天了。老母亲听见棺材里有呻吟声，赶忙将他扶出来。过了大半天，他才能说话。家里派人到长山县一带去打

文  
白

听，果然有张某此人，就在这一天死去了。

后来过了九年，宋母果真去世。等到为老母办完丧事以后，宋老先生沐浴更衣，进房安然而死。他岳父家住在县城西门内，这天忽然见宋老先生乘坐雕饰华丽的马车，并有众多随从陪同而来，登堂拜别。大家都很惊疑，却不知道他已经成了神仙。当岳父家的人奔走乡里去询问时，宋老先生已经去世了。

宋老先生有自己小传，可惜经过丧乱以后失传了，这里所记不过是个大略罢了。

## 耳中人

谭晋玄是县里的秀才，非常相信吐纳导引的法术。他日夜练习，不避寒暑。坚持了好几个月，觉得似乎有所收获。

有一天，他正盘腿静坐时，隐隐约约听见耳畔仿佛有一种像苍蝇那么细小的声音在说：“可以现形了。”当他睁开眼睛，那声音就听不见了；一闭上眼睛，平心静气，那声音又像先前一样听得很真切。他心想：一定是修炼“内丹”已经成功，暗自欣喜不已。

从此以后，他每次静坐时都能听到这种声音。于是他打算等再听到这种声音时作出反应，加以验证。一天，他又听到同样的话，于是便小声应答道：“可以现形了。”一会儿他就觉得耳里习习然，好像有个东西出来，侧目斜视，只见是个三寸来长的小人儿，形貌狰狞丑恶得像夜叉，旋转着落在地上。他暗暗诧异，索性凝神观察小人的变化。

这时，忽然有个邻居敲门，大声呼喊着要借东西。那小人听见，像是很慌张的样子，在屋子里绕圈子乱转，如同老鼠找不到洞穴。谭生顿时觉得魂魄失散，也不知道那小人的去向。于是得了疯癫病，不停地喊叫，经过足足半年时间的医治，才渐渐地痊愈。

## 尸 变

阳信县有位老翁是本县蔡店人。村子距县城约有五六里远。他和他儿子在路边开小店做生意，也供过路的商人住宿。有几个车夫，经常贩卖东西从这里过往，每次都要在他家里住。

一天黄昏时分，这四个人一起来到店门口，要求投宿。但老翁家里房间已经全部